प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलाम सेंटर में इण्डियन एसोसिएशन आॅफ गायनोकोलाॅजिकल एंडोस्कोपिस्ट्स का वार्षिक सम्मेलन लखनऊ आब्स्टेट्रिक्स एण्ड गायनकोलाॅजी सोसाइटी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया। उपरोक्त सम्मेलन की आयोजक सचिव प्रो0 उर्मिला सिंह, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, के0जी0एम0यू0 ने बताया कि अधिवेशन के पूर्व दूरबीन विधि ;लैप्रोस्कोपीद्ध से गर्भाशय के ट्यूमर, रसोली के आपॅरेशन, हिस्ट्रोस्कोपी ;गर्भाशय की जांचद्ध एवं मूत्रजनन सम्बंधित रोगो की विभिन्न प्रकार की सर्जरी चिकित्सा विश्वविद्यालय के शताब्दी फेज-1 स्थित, सर्जिकल गैस्ट्रोइंट्रोलाॅजी विभाग की ओटी में इण्डोस्कापी के माध्यम से किया गया तथा जिसका सजिव प्रसारण किया गया। उपरोक्त शल्य क्रिया के अंतर्गत 40 महिलाओं का 40 चिकित्सको द्वारा 6 आॅपरेशन थियेटर में विभिन्न मूत्रजनन अंग सम्बंधी विभिन्न शल्य क्रिया की गई। कार्यशााला का उद्घाटन चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रो0 भट्ट ने कहा कि इस प्रकार का सम्मेलन चिकित्सको ज्ञान में वृद्धि करता है तथा मरीजो की समस्याओं के निदान के लिए नई-नई तकनीकों के संदर्भ में पता चलता है।

कार्यशाला की सह-अध्यक्षा डाॅ0 अंजु अग्रवाल, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, के0जी0एम0यू0 ने बताया कि कार्यशाला में इण्डोस्कोपी के माध्यम से मिनिमल इंवेसिव सर्जरी के जरिए महिलाओं की सभी तरह के जटिल शल्य क्रियाओं को किया गया। इसमें अंतर्राष्ट्रीय सर्जन भी शामिल हुए। डाॅ0 मार्सिलो इटली एवं डाॅ0 अजय राने आस्ट्रेलिया से आए हुए है। इस तरह की शल्य क्रियाओं से बिना चीरा लगाए ही महिलाओं की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का निदान किया जाता है।

डाॅ0 नुतन जैन, मुफ्फरनगर द्वारा एक 18 वर्ष की युवती की बच्चेदानी का इण्डोस्कोपी के माध्यम से आॅपरेशन कर उसको सही जगह पर फिक्स किया गया । डाॅ0 जैन ने बतया कि उपरोक्त युवती की जन्म से ही बच्चेदानी बाहर थी जिसको अब सही जगह पर बिना चीरा लगाए फिक्स कर दिया गया है। डाॅ0 जैन ने बताया की कुछ केसों में ये दिक्कते कंजेनाईटल होती है तथा ऐसी औरते में भी यह समस्या पाई जाती है जिनका प्रसव अप्रशिक्षित दाईयों द्वारा कराया गया हो। उपरोक्त कार्यशाल में डाॅ0 मंजु शुक्ला ने बताया कि हिस्ट्रोस्कोपी के माध्यम से औरतें के जननांग सम्बंधि विभिन्न अंदरूनी जांचो को किया जा सकता है। कई बार औरतो में सेक्टम की विकृति के कारण गर्भधारण करने में कठिनाई होती है जिसे इण्डोस्कोपी के माध्यम से ठिक किया जा सकता हैं। कानपुर से आई डाॅ0 विनिता अवस्थी, ने बताया कि भारतीय महिलाओं में ट्यूबरकुलोसिस की वजह से फैलोपियन ट्यूब के चिपक जाने के मामले ज्यादा आते है जिनकी वजह से वो माॅ नही बन पाती है। ऐसी महिलाओं के फैलोपियन ट्यूब को इण्डोस्कोपी के माध्यम से रिपेयर किया जा सकता है या ऐसी महिलाओं के ट्यूब को भी जोड़ा जा सकता है जिनके फैलोपियन ट्यूब किसी वजह से कट गया हो।

डा0 अजय नारे द्वारा मूत्रजनन सम्बंधित शल्य क्रिया को किया गया एवं इसके बारे बातया गया। डाॅ0 अजय ने बताया कि स्ट्रेस यूरीनरी इनकंटीनेंस की वजह से महिलाओं में खासने, छिकते वक्त मूत्र निकल जाता है तथा वों मूत्र के वेग को सहन नही करपाती है ऐसे मरीजो में जब समस्या ज्यादा बढ़ जाती है तो उनमे इंडोस्कोपी के माध्यम से जाली लगाकर उसे ठिक किया जा सकता है।

उपरोक्त सम्मेलन की आयोजक सचिव डाॅ0 प्रीति कुमार ने वीवीएफ साइको वेजाइनल फिस्टुला के बारे में बताया कि जिन महिलाओं के मल द्वरा बाहर की ओर आजाता है ऐसी महिलाओं के मलद्वारा की इस समस्या को लैप्रोस्कोपी के माध्यम से ठिक किया जा सकता है। पहले इसके लिए ओपेन सर्जरी करनी पड़ती थी। इण्डो स्कोपी में थ्री डी टेक्निक का आना अब वरदान साबित हो गया है।

उपरोक्त कार्यशाला में डाॅ0 ऋषिकेश पई, डाॅ0 नन्दिता पलशेत्कर, डाॅ0 सुनीता, डाॅ0 शैलेश, डाॅ0 प्रकाश त्रिवेदी और देशभर के नामचीन लैप्रोस्कापिक सर्जन्स ने दूरबीन विधि से आॅपरेशन की आधुनिकतम तकनीक का सजीव प्रदर्शन किया। कार्यशाला में देश एवं प्रदेश की स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यशाला की आयोजन अध्यक्षा डाॅ0 चन्द्रावती एवं डाॅ0 अभिजीत चन्द्रा, विभागाध्यक्ष गैस्ट्रोइंट्रोलाॅजीक सर्जरी विभाग का विशेष सहयोग रहा।